डायरी का एक पन्ना (सीताराम सेकसरिया)

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में बताया गया है कि नेता जी सुभाषचंद्र बोस के साथ मिलकर लेखक ने स्वयं और समस्त कलकत्तावासियों ने दूसरा स्वतंत्रता दिवस कैसे मनाया। अंग्रेज़ी शासन ने इसे अपराध माना और आंदोलनकारियों, विशेषकर महिलाओं पर बहुत ज़ुल्म ढाए। यह पाठ हमें क्रांतिकारियों की कुरबानियों की याद तो दिलाता ही है, साथ ही यह भी बताता है कि एक संगठित समाज यदि संकल्प ले ले तो ऐसा कुछ भी नहीं, जिसे वह पूरा न कर सके।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

1. **अविनाश बाबू**–बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री। श्रद्धानंद पार्क में राष्ट्रीय झंडा गाड़ते हुए गिरफ़्तार हुए।
2. **हरिश्चंद्र सिंह**–बड़ा बाज़ार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री। तारा सुंदरी पार्क में झंडा फहराने के लिए पार्क के भीतर न जा सके।
3. **पूर्णोदास**–सुभाष बाबू के साथी। इन पर जुलूस के प्रबंध का उत्तरदायित्व था।
4. **सुभाष बाबू**–प्रमुख क्रांतिकारी। इन्हीं के नेतृत्व में कलकत्ता में दूसरा स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।
5. **ज्योतिर्मय गांगुली**–आंदोलनकारी। सुभाष बाबू के साथी।
6. **क्षितीश चटर्जी**–प्रमुख आंदोलनकारी। पुलिस की मार से बुरी तरह घायल हुए थे।
7. **विमल प्रतिभा**–स्त्रियों के जुलूस का नेतृत्व करने वाली आंदोलनकारी महिला।
8. **वृजलाल गोयनका**–कलकत्ता के प्रमुख व्यवसायी तथा लेखक के साथी। प्रमुख आंदोलनकारी।
9. **मदालसा**–प्रमुख महिला आंदोलनकारी, जिन्हें पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया था।
10. **डॉ० दासगुप्ता**–कलकत्ता के सम्मानित व्यक्ति और प्रमुख आंदोलनकारी, जिन्होंने घायलों का इलाज किया और उनके फ़ोटो खिंचवाए।

पाठ का सारांश

कलकत्ता में दूसरे स्वतंत्रता दिवस की तैयारी–पिछले साल 26 जनवरी, 1930 को पहला स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। कलकत्ता में यह स्वतंत्रता दिवस अच्छी प्रकार नहीं मनाया जा सका था। इस बार दूसरे स्वतंत्रता दिवस को पूरे उत्साह से मनाने की तैयारी हैं। सबको बता दिया गया है कि सारा प्रबंध स्वयं ही करना है। केवल प्रचार पर दो हज़ार रुपये खर्च हुए हैं। बाज़ार में और मकानों पर राष्ट्रीय झंडे लगाए गए थे। घरों को ऐसे सजाया गया था, मानो वास्तव में ही आज़ादी मिल गई हो।

पुलिस तथा कौंसिल की अपनी-अपनी तैयारी–पुलिस ने इस आयोजन को रोकने की पूरी तैयारी कर ली थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाल दिया था कि अमुक धारा के तहत कोई सभा नहीं हो सकती। यदि कोई सभा या जुलूस में भाग लेगा, उसे दोषी माना जाएगा। पुलिस पूरी ताकत से गश्त कर रही थी। अनेक मोड़ पर गोरखे और सारजेंट तैनात थे। ट्रैफ़िक पुलिस को भी इसी काम में लगा दिया गया था। घुड़सवार पुलिस भी थी। उधर कौंसिल ने भी खुली चुनौती दी थी कि चार बजकर चौबीस मिनट पर मोनुमेंट के नीचे राष्ट्रीय झंडा फहराया जाएगा और आज़ादी की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी।

मोनुमेंट में संघर्ष–मोनुमेंट के नीचे सभा होनी थी। पुलिस ने सभी पार्कों और मैदानों को घेर लिया था। फिर भी जगह-जगह झंडा फहराया गया। श्रद्धानंद पार्क में विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा। पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। तारा सुंदरी पार्क में पुलिस ने लाठीचार्ज किया, जिसमें कई लोगों के सिर फट गए। गुजराती सेविका संघ की बालिकाओं ने जुलूस निकाला तो उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। लेखक ने मोटर में घूमकर सब तरफ़ देखा तो बड़ा अच्छा लगा।

जुलूस रोकने की कोशिश–सुभाष बाबू के जुलूस की ज़िम्मेदारी पूर्णोदास पर थी। उन्होंने सारा प्रबंध कर लिया था। पुलिस ने उन्हें पहले ही पकड़ लिया। जगह-जगह से स्त्रियों की टोलियाँ निर्धारित स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थीं। तीन बजे तक हज़ारों की भीड़ जमा हो चुकी थी। कलकत्ता में इतनी बड़ी सभा पहले कभी नहीं हुई थी। 4 बजकर 10 मिनट पर सुभाष बाबू जुलूस लेकर चले। उन्हें चौरंगी पर रोका गया, लेकिन भीड़ अधिक होने के कारण जुलूस नहीं रुका। पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। अनेक लोग घायल हो गए। सुभाष बाबू भी घायल हुए, लेकिन वे वंदेमातरम् बोलते हुए आगे बढ़ते रहे। क्षितीश चटर्जी का फटा सिर देखकर आँखें मिच जाती थीं। स्वयंसेवक लाठियाँ खाकर भी हटते नहीं थे।

सुभाष बाबू की गिरफ़्तारी एवं जुलूस का टूटना–सुभाष बाबू को पकड़कर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद स्त्रियों का जुलूस निकला। पुलिस ने उन पर भी लाठियाँ बरसाईं। धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया। कुछ स्त्रियों को गिरफ़्तार करके लालबाज़ार भेज दिया गया। विमल प्रतिभा को भी गिरफ़्तार कर लिया गया। वृजलाल गोयनका और मदालसा को भी पकड़ लिया गया तथा उन्हें थाने में ले जाकर पीटा गया।

घायलों की संख्या और स्थिति–इस जुलूस में 105 स्त्रियाँ गिरफ़्तार हुईं। उन्हें रात को नौ बजे छोड़ दिया गया। कलकत्ता में पहले कभी स्त्रियों की इतनी गिरफ़्तारी नहीं हुई थी। कांग्रेस दफ़्तर में 103 घायल पहुँचे, जिनका इलाज डॉक्टर दासगुप्ता ने किया। 160 घायल विभिन्न अस्पतालों में पहुँचे थे। कुछ घायल लोग घर चले गए थे। पकड़े गए लोगों की संख्या का पता नहीं था।

यह संघर्ष अपने-आपमें महत्त्वपूर्ण था। कलकत्ता पर यह कलंक था कि पहले स्वतंत्रता दिवस पर यहाँ कोई काम नहीं हुआ, वह कलंक आज धुल गया। लोगों को आशा बँधी कि यहाँ भी आज़ादी के लिए काम हो सकता है।

शब्दार्थ

अमर दिन = जिसे हमेशा याद रखा जाएगा। **पुनरावृत्ति** = फिर से आना। **मोनुमेंट** = स्मारक। **भोर** = सुबह। **निराली** = अनोखी। **कौंसिल** = परिषद्। **वालेंटियर** = स्वयंसेवी। **संगीन** = बहुत गंभीर।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) बड़े बाज़ार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे कि ऐसा मालूम होता था कि मानो स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के प्रत्येक भाग में ही झंडे लगाए गए थे। जिस रास्ते से मनुष्य जाते थे उसी रास्ते में उत्साह और

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

नवीनता मालूम होती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई। पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी। मोटर लारियों में गोरखे तथा सारजेंट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे। कितनी ही लारियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं। घुड़सवारों का प्रबंध था। कहीं भी ट्रैफ़िक पुलिस नहीं थी, सारी पुलिस को इसी काम में लगाया गया था। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था। *(CBSE 2023)*

1. **घुड़सवारों का प्रबंध किसकी ओर से किया गया था–**
   (क) पुलिस प्रशासन
   (ख) कांग्रेस कौंसिल
   (ग) स्थानीय समिति
   (घ) केंद्र सरकार।
2. **बड़े बाज़ार के मकानों को सजाने और उन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने का क्या कारण था–**
   (क) स्वतंत्रता प्राप्ति की खुशी मनाना
   (ख) स्वतंत्रता दिवस की वर्षगाँठ मनाना
   (ग) लोगों में उत्साह और नवीनता का संचार करना
   (घ) लोगों में देशभक्ति की भावना का संचार करना।
3. **शहर में कहीं भी ट्रैफ़िक पुलिस क्यों नहीं थी–**
   (क) ट्रैफ़िक पुलिस गश्त के काम में लगी थी
   (ख) उस दिन शहर में कोई ट्रैफ़िक नहीं था
   (ग) ट्रैफ़िक पुलिस आज़ादी का उत्सव मना रही थी
   (घ) ट्रैफ़िक पुलिस को निरस्त कर दिया गया था।
4. **शहर के प्रत्येक मोड़ पर मोटर लारियों में गोरखे तथा सारजेंट क्यों तैनात थे–**
   (क) कार्यक्रम के दौरान होने वाली हिंसा को रोकने के लिए
   (ख) सरकारी आदेशानुसार कर्तव्य का निर्वाह करने के लिए
   (ग) शाम को होने वाली सभा का प्रबंध करने के लिए
   (घ) शाम को होने वाली सभा में सम्मिलित होने के लिए।
5. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**
   कथन (A)–पुलिस ने बड़ी संख्या में पार्कों तथा मैदानों को घेर लिया था।
   कारण (R)–पुलिस अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (घ)।

(2) जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। जो लोग काम करने वाले थे उन सबको इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी कि आप यदि सभा में भाग लेंगे तो दोषी समझे जाएँगे। इधर कौंसिल की तरफ़ से नोटिस निकल गया था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

1. **सभा को क्या कहा गया है–**
   (क) शांति सभा (ख) ओपन लड़ाई
   (ग) शोक सभा (घ) विश्व-सम्मेलन।
2. **किस कानून के भंग होने की बात की गई है–**
   (क) अमुक-अमुक धारा के अनुसार सभा न करने का कानून
   (ख) कोई भी उत्सव न मनाने का कानून
   (ग) झंडा न फहराने का कानून
   (घ) कहीं भी भाषण न देने का कानून।
3. **पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकलने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   (i) जनता को भयभीत करना
   (ii) सभा को होने से रोकना
   (iii) प्रचार करना
   (iv) अपनी ताकत दिखाना।
   (क) (i) और (ii) (ख) (ii) और (iii)
   (ग) (iii) और (iv) (घ) केवल (ii).
4. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   कथन (A)–कौंसिल का नोटिस निकल गया था।
   कारण (R)–झंडा नहीं फहराया जाना है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
5. **पुलिस कमिश्नर के अनुसार कौन दोषी समझा जाएगा–**
   (क) जो झंडा फहराएगा (ख) जो घरों को सजाएगा
   (ग) जो सभा में भाग लेगा (घ) जो उत्सव मनाएगा।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ग)।

(3) सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठाकर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ जुलूस बनाकर वहाँ से चलीं। साथ में बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। बीच में पुलिस कुछ ठंडी पड़ी थी, उसने फिर डंडे चलाने शुरू कर दिए। अबकी बार भीड़ ज़्यादा होने के कारण बहुत आदमी घायल हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया और करीब 50-60 स्त्रियाँ वहीं मोड़ पर बैठ गईं। पुलिस ने उनको पकड़कर लालबाज़ार भेज दिया। स्त्रियों का एक भाग आगे बढ़ा जिसका नेतृत्व विमल प्रतिभा कर रही थीं। उनको बहूबाज़ार के मोड़ पर रोका गया और वे वहीं मोड़ पर बैठ गईं। आस-पास बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई, जिस पर पुलिस बीच-बीच में लाठी चलाती थी।

1. **किसे पकड़ लिया गया–**
   (क) पूर्णोदास को (ख) बृजलाल गोयनका को
   (ग) सुभाष बाबू को (घ) मदालसा को।
2. **जुलूस टूटने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   (i) जुलूस का कमज़ोर होना
   (ii) नेतृत्व का अभाव
   (iii) पुलिस की मार
   (iv) एकता का अभाव
   (क) (i) और (ii) (ख) (ii) और (iii)
   (ग) (iii) और (iv) (घ) केवल (iv).

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

3. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**

कथन (A)–कुछ देर बाद स्त्रियाँ जुलूस बनाकर वहाँ से चलीं।

कारण (R)–उन सबको गिरफ़्तार कर लिया गया।

(क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

4. **स्त्रियों का नेतृत्व कौन कर रहा था–**

(क) मदालसा (ख) विमल प्रतिभा

(ग) सुजाता (घ) नीलम गोयल।

5. **स्त्रियों के जुलूस को कहाँ रोका गया–**

(क) धर्मतल्ले के मोड़ पर (ख) लालबाज़ार में

(ग) पीली कोठी पर (घ) बहूबाज़ार के मोड़ पर।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (घ)।

(4) इस प्रकार करीब पौन घंटे के बाद पुलिस की लारी आई और उनको लालबाज़ार ले जाया गया। और भी कई आदमियों को पकड़ा गया। बृजलाल गोयनका जो कई दिन से अपने साथ काम कर रहा था और दमदम जेल में भी अपने साथ था, पकड़ा गया। पहले तो वह झंडा लेकर वंदे मातरम् बोलता हुआ मोनुमेंट की ओर इतने ज़ोर से दौड़ा कि अपने आप ही गिर पड़ा और उसे एक अंग्रेज़ी घुड़सवार ने लाठी मारी फिर पकड़कर कुछ दूर ले जाने के बाद छोड़ दिया। इस पर वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया और वहाँ पर भी उसको छोड़ दिया तब वह दो सौ आदमियों का जुलूस बनाकर लालबाज़ार गया और वहाँ पर गिरफ़्तार हो गया। मदालसा भी पकड़ी गई थी। उससे मालूम हुआ कि उसको थाने में भी मारा था। सब मिलाकर 105 स्त्रियाँ पकड़ी गई थीं। बाद में रात को नौ बजे सबको छोड़ दिया गया। कलकत्ता में आज तक इतनी स्त्रियाँ एक साथ गिरफ़्तार नहीं की गई थीं। करीब आठ बजे खादी भंडार आए तो कांग्रेस ऑफ़िस से फ़ोन आया कि यहाँ बहुत आदमी चोट खाकर आए हैं और कई की हालत संगीन है उनके लिए गाड़ी चाहिए। जानकीदेवी के साथ वहाँ गए, बहुत लोगों को चोट लगी हुई थी। डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देख-रेख तथा फ़ोटो उतरवा रहे थे। उस समय तक 67 आदमी वहाँ आ चुके थे। बाद में तो 103 तक आ पहुँचे।

1. **लेखक के साथ कई दिन से कौन काम कर रहा था–**

(क) पूर्णोदास (ख) पुरुषोत्तम

(ग) बृजलाल गोयनका (घ) क्षितीश चटर्जी।

2. **बृजलाल गोयनका के गिर जाने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**

(i) कमज़ोर होना

(ii) पुलिस की मार

(iii) तेज़ दौड़ना

(iv) अधिक जोश

(क) (i) और (ii) (ख) (ii) और (iii)

(ग) केवल (iii) (घ) (iii) और (iv).

3. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**

कथन (A)–बहुत लोगों को चोट लगी हुई थी।

कारण (R)–डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देख-रेख कर रहे थे।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. **कांग्रेस ऑफ़िस से किस चीज़ की आवश्यकता के लिए फ़ोन आया–**

(क) कपड़ों के लिए (ख) दवाइयों के लिए

(ग) भोजन के लिए (घ) गाड़ी के लिए।

5. **घायलों की देख-रेख कौन कर रहा था–**

(क) डॉक्टर दासगुप्ता (ख) डॉक्टर जतिनघोष

(ग) डॉक्टर नलिन गुप्ता (घ) डॉक्टर कमलनाथ।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (क)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **'डायरी का एक पन्ना' पाठ के लेखक हैं–**

(क) प्रेमचंद (ख) लीलाधर मंडलोई

(ग) सीताराम सेकसरिया (घ) प्रह्लाद अग्रवाल।

2. **सीताराम सेकसरिया का जन्म किस प्रदेश में हुआ–**

(क) उत्तर प्रदेश (ख) बिहार

(ग) मध्य प्रदेश (घ) राजस्थान।

3. **लेखक ने किस दिन को 'अमर दिन' कहा है–**

(क) 30 जनवरी को (ख) 20 जनवरी को

(ग) 26 जनवरी को (घ) 31 दिसंबर को।

4. **26 जनवरी को सारे देश में क्या मनाया गया था–**

(क) स्वतंत्रता दिवस (ख) शहीद दिवस

(ग) पर्यावरण दिवस (घ) नारी दिवस।

5. **'गतवर्ष' अपना हिस्सा बहुत साधारण था।'– वाक्य में 'अपना' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है–**

(क) मुंबई वासियों के लिए (ख) दिल्ली वासियों के लिए

(ग) कोलकाता वासियों के लिए (घ) लखनऊ वासियों के लिए।

6. **'स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए प्रचार पर कितना खर्च किया गया–**

(क) चार हज़ार रुपया (ख) तीन हज़ार रुपया

(ग) दो हज़ार रुपया (घ) पाँच हज़ार रुपया।

7. **निम्नलिखित में से कौन-से वाक्य 'डायरी का एक पन्ना' से मेल खाते हैं–** ***(CBSE SQP 2023-24)***

(i) पुरानी सभ्यता के बारे में ज़्यादा किस्से-कहानियाँ सुनने को मिलते हैं।

(ii) एक संगठित समाज कृत संकल्प हो तो वह कुछ भी कर सकता है।

(iii) यह पाठ हमारे क्रांतिकारियों की याद दिलाता है और देशभक्ति का भाव भरता है।

(iv) 26 जनवरी, 1930 को गुलाम भारत में पहली बार स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था।

(क) केवल (i) (ख) (i) और (ii)

(ग) केवल (iv) (घ) (ii), (iii) और (iv).

8. **पुलिस ने किस स्थान को घेर लिया था–**

(क) बड़े बाज़ार को (ख) मोनुमेंट के सभा-स्थल को

(ग) लालबाज़ार को (घ) धर्मतल्ले को।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

9. **प्रत्येक मोड़ पर मोटर लारियों में कौन तैनात थे–**

(क) पहरेदार (ख) चौकीदार

(ग) गोरखे और सारजेंट (घ) अंग्रेज़ अधिकारी।

10. **श्रद्धानंद पार्क में किसने झंडा गाड़ा–**

(क) अविनाश बाबू ने (ख) पूर्णोदास ने

(ग) पुरुषोत्तम राव ने (घ) सुभाष बाबू ने।

11. **गुजराती सेविका संघ की ओर से क्या किया गया–**

(क) भाषण दिया गया

(ख) जुलूस निकाला गया

(ग) झंडा फहराया गया

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

12. **कौंसिल का नोटिस अंग्रेज़ सरकार के लिए क्या था–**

(क) खुली चुनौती (ख) धमकी

(ग) एक निवेदन (घ) ये सभी।

13. **कलकत्तावासियों के लिए 26 जनवरी, 1931 का दिन क्यों महत्त्वपूर्ण था–**

(क) लोगों ने अंग्रेज़ी सरकार का डट कर विरोध किया

(ख) स्वतंत्रता दिवस मनाया

(ग) स्वतंत्रता की घोषणा पढ़ डाली

(घ) उपर्युक्त में से सभी।

14. **किस दृश्य को देखकर आँख मिच जाती थी–**

(क) पुलिस के अत्याचार को देखकर

(ख) पुलिस को देखकर

(ग) क्रांतिकारियों को देखकर

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

15. **सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था–**

(क) पूर्णोदास पर (ख) स्त्रियों पर

(ग) पुलिस पर (घ) इनमें से कोई नहीं।

16. **डायरी का पन्ना कहानी कब लिखी गई–**

(क) 26 जनवरी, 1931 को (ख) 26 जनवरी, 1932 को

(ग) 26 जनवरी, 1933 को (घ) इनमें से कोई नहीं।

17. **अविनाश बाबू कौन थे–**

(क) बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री

(ख) बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के सचिव

(ग) बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के प्रधान

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

18. **मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने क्या किया–**

(क) प्रतिज्ञा पढ़ी (ख) नृत्य किया

(ग) झंडोत्सव मनाया (घ) जुलूस निकाला।

19. **पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था–**

(क) लोग झंडा न फहरा सकें

(ख) लोग हुड़दंग ना मचाएँ

(ग) लोग घूम ना सकें

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

20. **मोनुमेंट पर झंडा किसने फहराया–**

(क) सुभाष बाबू ने (ख) पूर्णोदास ने

(ग) अविनाश बाबू ने (घ) स्त्रियों ने।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ग) **6.** (ग) **7.** (घ) **8.** (ख) **9.** (ग) **10.** (क) **11.** (ख) **12.** (क) **13.** (घ) **14.** (क) **15.** (क) **16.** (क) **17.** (क) **18.** (ग) **19.** (क) **20.** (घ)।

भाग-2
(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : **कलकत्तावासियों के लिए 26 जनवरी, 1931 का दिन क्यों महत्त्वपूर्ण था?**

उत्तर : 26 जनवरी, 1931 का दिन कलकत्तावासियों के लिए इसलिए महत्त्वपूर्ण था; क्योंकि इस दिन वहाँ के सभी स्त्री-पुरुषों ने साथ मिलकर स्वतंत्रता दिवस मनाया था और अंग्रेज़ी कानून का उल्लंघन करके मोनुमेंट के ऊपर राष्ट्रीय झंडा फहराया था।

प्रश्न 2 : **विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?** *(CBSE 2015)*

उत्तर : विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और उनके साथियों को मार-पीटकर भगा दिया।

प्रश्न 3 : **पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था?**

उत्तर : पुलिस को पता था कि स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए लोग पार्कों व मैदानों में इकट्ठा होंगे। वह स्वतंत्रता दिवस नहीं मनाने देना चाहती थी, इसलिए उसने मैदानों और पार्कों को घेर लिया था।

प्रश्न 4 : **लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?**

उत्तर : लोग अपने मकानों और सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर स्वतंत्रता दिवस मनाने और आज़ाद होने का संकेत देना चाहते थे।

प्रश्न 5 : **'आज की जो बात थी वह निराली थी'– किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आपमें निराला है? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर : आज 26 जनवरी, 1931 का दिन था, जो दूसरा स्वतंत्रता दिवस था। यह दिन निराला इसलिए था; क्योंकि कलकत्तावासी स्त्री-पुरुषों ने इस दिन को बड़े उत्साह और उमंग से मनाने का निर्णय लिया था। स्त्री-पुरुष अलग-अलग स्थानों से जुलूस निकालने की तैयारी में थे। वे ठीक स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रहे थे। मैदानों में हज़ारों की भीड़ जमा होने लगी थी और लोग टोलियाँ बना-बनाकर मैदानों में घूमने लगे थे।

प्रश्न 6 : **धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?**

उत्तर : धर्मतल्ले के मोड़ तक आते-आते जुलूस के नेता सुभाष बाबू को गिरफ्तार कर लिया गया और लोगों पर लाठियाँ बरसाई गईं। इस प्रकार पुलिस की मार और नेतृत्व के अभाव में जुलूस टूट गया।

प्रश्न 7 : **26 जनवरी, 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं?**

उत्तर : कलकत्तावासियों ने 26 जनवरी, 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए अनेक तैयारियाँ कीं। घरों, मकानों और बाज़ारों को ऐसे सजाया गया, मानो आज़ादी मिल गई हो। प्रत्येक घर पर राष्ट्रीय झंडा लगाया गया। प्रचार पर भी दो हज़ार रुपये खर्च किए गए। घर-घर जाकर लोगों को समझाया गया।

प्रश्न 8 : **पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?**

उत्तर : पुलिस कमिश्नर और कौंसिल के नोटिस में बड़ा अंतर था। दोनों एक-दूसरे के विपरीत थे। पुलिस कमिश्नर के नोटिस में कहा गया था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती और जो लोग सभा में भाग लेंगे, वे दोषी समझे जाएँगे; जबकि कौंसिल के

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

नोटिस में कहा गया था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। इसमें सर्व-साधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। यह एक खुला चैलेंज था. जिसमें पुलिस कमिश्नर के नोटिस की अवज्ञा की गई थी।

प्रश्न 9 : सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

उत्तर : सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री-समाज की अहम् भूमिका थी। स्त्री समाज ने जगह-जगह से जुलूस निकालने तथा ठीक स्थान पर पहुँचने की तैयारी और कोशिश की थी। स्त्रियों ने मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़कर झंडा फहराकर घोषणा-पत्र पढ़ा था तथा पुलिस के बहुत-से अत्याचारों का सामना किया था। विमल प्रतिभा. जानकीदेवी और मदालसा आदि ने जुलूस का सफल नेतृत्व किया था।

प्रश्न 10 : डॉ० दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख-रेख तो कर ही रहे थे, उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खींचने की क्या वजह हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : डॉ० दासगुप्ता घायलों की देख-रेख करने के साथ-साथ उनके फोटो इसलिए खिंचवा रहे थे, ताकि उन्हें लोगों को दिखाकर बताया जा सके कि कलकत्ता के लोग स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने में किसी से पीछे नहीं हैं। इसके अलावा देश तथा दुनिया के लोगों को अंग्रेज़ी शासकों का अत्याचार दिखा सकें, जिससे लोगों में अंग्रेज़ी शासन के प्रति विरोध की भावना उग्र हो सके।

प्रश्न 11 : सुभाष बाबू ने कब और कैसे जुलूस निकाला? यह दिन किस अमर दिन की स्मृति में था?

उत्तर : सुभाष बाबू ने 26 जनवरी, 1931 को कलकत्ता में जुलूस निकाला। इस जुलूस को निकालने में उन्होंने पुलिस की लाठियों की भी कोई परवाह नहीं की। यह दिन 26 जनवरी, 1930 को संपूर्ण भारत में मनाए गए प्रथम स्वतंत्रता दिवस की स्मृति में था।

प्रश्न 12 : बहुत-से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत-सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : हमारे विचार में 26 जनवरी, 1931 के दिन कलकत्ता में आज़ादी के लिए व्यापक विरोध तथा संघर्ष हुआ था और यह अपूर्व इसलिए है: क्योंकि पहले कभी अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध जुलूस नहीं निकाला गया, न ही इससे पहले कभी इतने बड़े स्तर पर सरकार को खुली चुनौती दी गई थी। प्रदर्शनकारियों पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया तथा बहुत-से लोग घायल हुए. फिर भी भारी संख्या में स्त्रियों ने जुलूस निकाला और गिरफ़्तारियाँ दीं। इससे पहले ऐसा नहीं हुआ था। इसलिए इसको अपूर्व कहा गया है।

प्रश्न 13 : 'आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है, वह आज बहुत अंश में धुल गया।' आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **आशय**–इसका आशय है कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए इतना बड़ा आंदोलन बंगाल या कलकत्ता में नहीं हुआ था। देशभर के लोगों का यह मानना था कि स्वतंत्रता आंदोलन को लेकर कलकत्ता के लोग उदासीन हैं और वे इसमें अपना कोई योगदान नहीं दे रहे हैं, यह बात कलकत्ता के माथे पर कलंक थी। लेकिन इसे 26 जनवरी, 1931 को दूसरे स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हुए ज़बरदस्त आंदोलन ने धो दिया। इस संग्राम में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था। इसमें सैकड़ों महिला-पुरुष घायल हुए और जेल गए। अब लोगों के अंदर देशभक्ति की भावना का संचार हो चुका था।

प्रश्न 14 : 'खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।' आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **आशय**–इसका आशय है कि दूसरे स्वतंत्रता दिवस को मनाने के लिए कोई गुपचुप योजना नहीं बनाई गई थी, बल्कि खुला ऐलान किया गया कि इस दिन 4 बजकर 24 मिनट पर मोनुमेंट पर जुलूसपूर्वक झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता-प्राप्ति की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। इससे पहले इस प्रकार खुला चैलेंज देकर इस प्रकार की कोई सभा, जुलूस या प्रदर्शन नहीं किया गया था। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकालकर जुलूस और सभा को प्रतिबंधित कर दिया था। इस नोटिस की परवाह न करते हुए सीधे-सीधे ब्रिटिश शासन को खुला चैलेंज दिया गया था। 26 जनवरी, 1931 को पूर्व घोषणा के अनुसार जुलूस निकला, जिसको रोकने के लिए पुलिस ने लाठीचार्ज तक किया।

प्रश्न 15 : 26 जनवरी, 1931 के दिन बड़े बाज़ार का माहौल कैसा था? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : 26 जनवरी, 1931 के दिन कलकत्ता के बड़े बाज़ार का दृश्य बहुत ही उत्साहपूर्ण था। प्रत्येक मकान और दुकान पर राष्ट्रीय झंडा लहरा रहा था। कुछ घरों को तो इस प्रकार सजाया गया था, मानो आज़ादी मिल गई हो। कलकत्ता का हर स्त्री-पुरुष उत्साह से भरा नज़र आ रहा था।

प्रश्न 16 : आज़ादी से पहले 26 जनवरी को किस रूप में मनाया जाता था और क्यों?

उत्तर : आज़ादी से पहले 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता था: क्योंकि कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में 26 जनवरी, 1930 को पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पास हुआ। इस दिन देशवासियों ने स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा ली। आज़ादी से पहले तक यह दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता रहा। आज़ादी के बाद यह गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

प्रश्न 17 : विमल प्रतिभा ने किसका नेतृत्व किया था? स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

उत्तर : विमल प्रतिभा ने स्त्रियों के दल का नेतृत्व किया था। स्त्रियों ने इस आंदोलन में बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी। उन्हें बहूबाज़ार के मोड़ पर रोक लिया गया था। स्त्रियाँ वहीं मोड़ पर बैठ गईं। आस-पास भीड़ इकट्ठी हो गई। पुलिस स्त्रियों पर भी लाठीचार्ज कर रही थी, लेकिन वह उनके हौसले को नहीं तोड़ पाई थी।

प्रश्न 18 : 'लेखक की डायरी का एक पृष्ठ' भावी पीढ़ी को किस प्रकार प्रेरित करता है?

उत्तर : 'लेखक की डायरी का एक पृष्ठ' भावी पीढ़ी को यह संदेश देता है कि आज़ादी के लिए संघर्ष करना पड़ता है और बलिदान भी देना पड़ता है। पाठ में बताया गया है कि सुभाष चंद्र बोस ने आज़ादी के लिए संघर्ष किया, पुलिस की लाठियाँ खाईं और जेल का कष्ट भी भोगा। इतना ही नहीं आज़ादी के लिए स्त्रियों ने भी पूरा संघर्ष किया। अतः भावी पीढ़ी को भी ऐसे संघर्ष के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

प्रश्न 19 : कलकत्तावासियों के माथे पर क्या कलंक था और उन्होंने इसे किस प्रकार मिटाया? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : 26 जनवरी, 1930 को सारे देश में प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। कलकत्ता में इस दिन कोई विशेष कार्यक्रम या गतिविधि नहीं हुई थी। इसकी सारे देश में आलोचना हुई थी। 26 जनवरी, 1931 को दूसरे स्वतंत्रता दिवस पर लोगों ने विशेष उत्साह दिखाया। यह

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दिन यहाँ के स्त्री-पुरुषों ने कंधे-से-कंधा मिलाकर मनाया। जुलूस निकाले, सभाएँ कीं तथा राष्ट्रीय झंडा लहराया। लोगों ने स्वतंत्रता की शपथ पढ़ी। पुलिस की लाठियाँ खाई तथा गिरफ़्तारियाँ भी दीं। ऐसा करके उन्होंने अपने माथे पर लगे प्रथम स्वतंत्रता दिवस न मनाए जाने के कलंक को धो दिया।

प्रश्न 20 : जेल के बारे में मदालसा से क्या जानकारी मिली?

उत्तर : मदालसा से यह जानकारी मिली कि 200 आदमियों का जुलूस लालबाज़ार गया और वहाँ गिरफ़्तार हो गया। जेल में उन पर लाठियाँ बरसाई गईं। उसे (मदालसा को) भी गिरफ़्तार कर लिया गया। कुल मिलाकर 105 स्त्रियाँ गिरफ़्तार की गई। उनको थाने में मारा-पीटा गया। कलकत्ता में इतनी स्त्रियाँ पहले कभी गिरफ़्तार नहीं हुई थीं। लोग घायल हुए और उन्हें गंभीर चोटें आईं।

प्रश्न 21 : 26 जनवरी, 1931 के दिन कलकत्ता में मार्गों की क्या स्थिति हो गई थी? बताइए। *(CBSE 2015)*

उत्तर : 26 जनवरी, 1931 के दिन कलकत्ता के प्रत्येक मार्ग पर स्वतंत्रता दिवस मनाने वाले स्त्री-पुरुष जुलूस निकाल रहे थे। सभी लोग हाथों में राष्ट्रीय झंडा लेकर वंदे मातरम् के नारे लगा रहे थे। उधर हर गली में पुलिस भी गश्त लगा रही थी। हर मोड़ पर गोरखे और सारजेंट तैनात थे। जगह-जगह जुलूस में शामिल लोगों से पुलिस की झड़प हो रही थी। पुलिस लोगों पर लाठियाँ बरसा रही थी और उन्हें गिरफ़्तार कर रही थी। जुलूस निकालने के अपराध में 105 स्त्रियाँ भी गिरफ़्तार हुई थीं।

प्रश्न 22 : बृजलाल गोयनका कौन थे? उनकी गतिविधियों के बारे में बताइए।

उत्तर : बृजलाल गोयनका कलकत्ता के एक स्वतंत्रता सेनानी थे तथा लेखक के साथी थे। 26 जनवरी, 1931 के दिन उन्होंने स्वतंत्रता दिवस मनाने में विशेष भूमिका निभाई थी। वह वंदे मातरम् बोलते हुए झंडा लेकर मोनुमेंट की ओर दौड़े, लेकिन गिर पड़े। गिरते ही घुड़सवार पुलिस ने उन्हें लाठी मारी। फिर वह 200 आदमियों का जुलूस लेकर लालबाज़ार की ओर बढ़े तथा गिरफ़्तार हो गए।

प्रश्न 23 : आज़ादी के संघर्ष में विद्यार्थियों की क्या भूमिका थी?

उत्तर : आज़ादी के संघर्ष में विद्यार्थियों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण थी। मारवाड़ी बालिका विद्यालय जैसे अनेक विद्यालयों में लड़कियों ने झंडोत्सव मनाया था। उन्हें जानकी देवी, मदालसा जैसी नेत्रियों ने संबोधित किया था। बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने भी झंडा फहराने में अग्रणी भूमिका निभाई थी। इससे पता चलता है कि स्वतंत्रता-संघर्ष में विद्यार्थियों का भी भरपूर योगदान था।

प्रश्न 24 : 'एक संगठित समाज कृत संकल्प हो तो ऐसा कुछ भी नहीं जो वह ना कर सके।' 'डायरी का एक पन्ना' पाठ के संबंध में कहे गए उक्त कथन की उदाहरण सहित पुष्टि कीजिए। *(CBSE 2020)*

उत्तर : 'एक संगठित समाज कृत संकल्प हो तो ऐसा कुछ भी नहीं, जो वह न कर सके।' –यह कथन सत्य है। कलकत्ता वासियों ने 30 जनवरी, 1931 को स्वतंत्रता दिवस मनाने का संकल्प किया। पुलिस ने इसे रोकने का पूरा प्रयास किया। लोगों पर लाठियाँ बरसाई, लेकिन कलकत्ता के संगठित समाज ने जुलूस निकाला, झंडा फहराया और प्रतिज्ञा भी पढ़ी। इस प्रकार उस संगठित समाज ने अपना संकल्प पूरा किया।

प्रश्न 25 : जुलूस और प्रदर्शन को रोकने के लिए पुलिस का क्या प्रबंध था? 'डायरी का एक पन्ना' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर : 26 जनवरी, 1931 के दिन कलकत्ता में होने वाले प्रदर्शन और जुलूस को रोकने के लिए पुलिस ने पूरा प्रबंध किया था। शहर के हर मोहल्ले और हर गली में पुलिस गश्त कर रही थी। हर मोड़ पर गोरखे और सारजेंट तैनात थे। ट्रैफ़िक पुलिस को भी इसी काम में लगा दिया गया था। घुड़सवार पुलिस भी इधर से उधर घूम रही थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाल दिया था कि जुलूस निकालना और सभा करना कानूनन अपराध है। जो इस कानून को तोड़ेगा, उसे सज़ा मिलेगी। जुलूस और प्रदर्शन को रोकने के लिए पुलिस ने लोगों पर लाठियाँ भी बरसाई थीं। सैकड़ों स्त्री-पुरुषों को गिरफ़्तार करके जेल भेज दिया गया था। इस प्रकार पुलिस ने इस आयोजन को सफल न होने देने का पूरा प्रयास किया।

प्रश्न 26 : जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

अथवा **जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई? उसका लाभ क्रांतिकारियों को किस प्रकार मिला?**

उत्तर : जुलूस के लालबाज़ार आते-आते लोगों का जोश चरम पर पहुँच गया था। पुलिस ने भी पूरा रौद्र रूप धारण कर लिया था। अनेक लोगों को गिरफ़्तार कर लिया गया। बृजलाल गोयनका को एक अंग्रेज़ घुड़सवार ने लाठी मारी, फिर पकड़कर दूर तक ले गए और छोड़ दिया। वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया। वहाँ से दो सौ लोगों का जुलूस बनाकर लालबाज़ार गया। वहाँ उसे गिरफ़्तार कर लिया गया। मदालसा भी पकड़ी गई। लगभग 105 स्त्रियाँ पकड़ी गईं, जिन्हें बाद में छोड़ दिया गया। सैकड़ों लोग घायल हो गए थे, जिनका इलाज डॉक्टर दासगुप्ता ने किया। इससे क्रांतिकारियों को यह लाभ हुआ कि बंगाल या कलकत्ता के नाम पर स्वतंत्रता के लिए काम न करने का जो कलंक था, वह धुल गया था और लोग सोचने लगे थे कि यहाँ भी स्वतंत्रता के लिए बहुत-सा काम हो सकता है। अर्थात् अब उन्हें जन समर्थन मिलने की संभावना प्रबल हो गई थी।

प्रश्न 27 : 'जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है, तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन-से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था? पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर : यहाँ पर उस कानून को भंग करने की बात कही गई है, जो अंग्रेज़ी शासन ने लागू किया था। इसके अंतर्गत भारतीयों का आज़ादी के लिए संघर्ष करना, जुलूस निकालना, भाषण देना, सभाएँ करना तथा राष्ट्रीय झंडा फहराना गंभीर अपराध था। इसको तोड़ने पर कठोर सज़ा का प्रावधान था। कलकत्तावासियों ने इसी कानून को तोड़कर दूसरा स्वतंत्रता दिवस मनाया था। हमारे विचार से ऐसे कानून को भंग करना उचित था; क्योंकि आज़ादी मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसके लिए अवश्य संघर्ष करना चाहिए, चाहे कोई भी कानून तोड़ना पड़े।

प्रश्न 28 : 'डायरी का एक पन्ना' पाठ हमारे स्वतंत्रता संघर्ष का एक दर्पण है। कैसे?

उत्तर : 'डायरी का एक पन्ना' में 26 जनवरी, 1931 के दिन कलकत्ता में राष्ट्रीय झंडा फहराए जाने का वर्णन है। यह वर्णन भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के दृश्य को हमारी आँखों के सामने साकार

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

करता है। इस दिन भारतीय जनता ने अंग्रेज़ सरकार के विरुद्ध खुला विद्रोह किया था। कांग्रेस के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन जारी था। सरकार का आदेश था कि 26 जनवरी, 1931 को न तो कोई सार्वजनिक सभा होगी और न भारत का राष्ट्रीय झंडा फहराया जाएगा। इधर स्वतंत्रता-आंदोलन का नेतृत्व करने वाली कौंसिल ने खुली चुनौती दी कि वे शाम को मोनुमेंट के नीचे सभा करेंगे और खुलेआम झंडा फहराएँगे। यह खुला विद्रोह था। पुलिस ने खुलकर लाठीचार्ज किया, पकड़-धकड़ की और आंदोलन को दबाने की कोशिश की। लोगों में अभूतपूर्व उत्साह था। वे लाठी खाकर भी रुकते नहीं थे। हज़ारों नर-नारी सभास्थल पर इकट्ठे हुए। सैकड़ों घायल हुए, सैकड़ों पकड़े गए। कितनों को जेलों में बंद कर दिया गया। सरकार की हर कोशिश के बावजूद निर्धारित समय पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी गई। स्वतंत्रता-संग्राम के समय देश के हर शहर और नगर में ऐसा ही दृश्य था। अतः यह पाठ हमारे स्वतंत्रता-संग्राम का एक आइना है।

प्रश्न 29 : 'डायरी का एक पन्ना' पाठ आपको देश की आज़ादी के इतिहास को पढ़ने के लिए किस प्रकार प्रेरित करता है? *(CBSE 2015)*

उत्तर : 'डायरी का एक पन्ना' पाठ देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत है। इस पाठ में लेखक ने दूसरे स्वतंत्रता दिवस का वर्णन किया है, जिसे अन्य देशवासियोंसहित नेता जी सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में कलकत्तावासियों ने पूरे उत्साह से मनाया था। यह पाठ हमें उन क्रांतिकारियों की याद दिलाता है, जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। आज़ादी की इस लड़ाई में हमारे देश के हर वर्ग के स्त्री-पुरुषों ने संगठित होकर ऐसा संघर्ष किया था कि दुनिया में सबसे शक्तिशाली समझे जाने वाले अंग्रेज़ी शासन की नींव हिल गई थी। उस समय प्रत्येक देशवासी में स्वतंत्रता के लिए ऐसा उन्माद था कि वह पुलिस की बर्बरता को बिना झुके सहन करता और हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते पर भी चढ़ जाता था। इस संघर्ष में देश की स्त्रियाँ भी पीछे नहीं रहीं। इस पाठ को पढ़कर कोई भी देशप्रेमी भावुक हो सकता है तथा देश की आज़ादी के इतिहास को पढ़ने के लिए प्रेरित हो सकता है।

प्रश्न 30 : 'डायरी का एक पन्ना' पाठ के आधार पर बताइए कि पुलिस ने कैसा दमनचक्र चलाया और क्यों? लोगों ने कैसे उसका मुँहतोड़ जवाब दिया? *(CBSE 2015)*

उत्तर : 'डायरी का एक पन्ना' पाठ में लेखक सीताराम सेकसरिया ने 26 जनवरी, 1931 का वर्णन किया है। 26 जनवरी, 1931 को गुलाम भारतवर्ष में दूसरा स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। कलकत्तावासियों ने आज़ादी के इस जश्न में बढ़-चढ़कर भाग लिया। बड़े बाज़ार के प्रायः सभी मकानों पर झंडे फहरा रहे थे। पूरे कलकत्ता की रौनक देखते ही बनती थी। जिस रास्ते पर प्रदर्शनकारी जाते थे, उसी रास्ते में उत्साह एवं नवीनता मालूम होती थी। दूसरी तरफ़ अंग्रेज़ी सरकार इस आंदोलन को विफल करने में पूरी ताकत से जुटी हुई थी। इस आंदोलन की सफलता सरकार की विफलता थी; अतः पुलिस ने इसे रोकने के लिए सभी संभव इंतज़ाम किए थे। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था। आंदोलन ज्यों-ज्यों उग्र होता जा रहा था, त्यों-त्यों पुलिस का दमनचक्र भयंकर रूप लेता जा रहा था। पुलिस ने जुलूस पर लाठीचार्ज किया। इस लाठीचार्ज में अनेक लोग घायल हुए। क्षितीश चटर्जी का सिर फट गया। बृजलाल गोयनका को एक अंग्रेज़ घुड़सवार ने लाठी से मारा और पकड़कर दूर तक घसीटा। स्त्री कार्यकर्ताओं पर भी जमकर लाठीचार्ज किया गया। अंग्रेज़ों के इस अत्याचार के चलते 160 से भी अधिक आदमी बुरी तरह से घायल हो गए थे। लगभग 105 स्त्रियों को लालबाज़ार में गिरफ़्तार किया गया। कलकत्तावासियों ने अंग्रेज़ों के इस अत्याचार का मुँहतोड़ जवाब दिया। पुलिस द्वारा निर्ममता से लाठीचार्ज करने पर भी विभिन्न पार्कों एवं मोनुमेंट पर भारी तादाद में पहुँचकर; झंडा फहराकर तथा शपथ-पत्र पढ़कर कलकत्तावासियों ने यह सिद्ध कर दिया कि अब वे सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों से नहीं डरते। कोलकाता में यह सब अभूतपर्वू था, इसलिए लेखक ने डायरी में लिखा— "आज जो बात थी वह निराली थी।"

प्रश्न 31 : मैदान में सभा न होने देने के लिए पुलिस बंदोबस्त का विवरण देते हुए सुभाषबाबू के जुलूस और उनके साथ पुलिस के व्यवहार की चर्चा कीजिए। *(CBSE 2019)*

उत्तर : मैदान में सभा न होने देने के लिए पुलिस ने पूरा बंदोबस्त कर लिया था। पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। पुलिस पूरी ताकत से शहर में गश्त लगाकर प्रदर्शन कर रही थी। मोटर लारियों में गोरखे और सारजेंट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे। कितनी ही लारियाँ शहर में घूम रही थीं। घुड़सवारों का भी प्रबंध था। ट्रैफ़िक पुलिस को भी इसी काम में लगा दिया गया था। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था।

ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाषबाबू जुलूस लेकर आए। उन्हें चौरंगी पर ही रोका गया, लेकिन भीड़ की अधिकता के कारण पुलिस जुलूस को नहीं रोक सकी। मैदान के मोड़ पर पहुँचते ही पुलिस ने लाठी चार्ज शुरू कर दिया। बहुत-से आदमी घायल हुए, सुभाषबाबू पर भी लाठियाँ पड़ीं। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। क्षितीश चटर्जी तथा बृजलाल गोयनका भी घायल हो गए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया। अंत में स्त्रियों ने जुलूस की बागडोर सँभाली। पुलिस ने उन पर भी लाठियाँ बरसाईं। 105 स्त्रियों को गिरफ़्तार कर लिया गया, लेकिन अंत में कुछ स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ गईं। उन्होंने झंडा फहराया और प्रतिज्ञा पढ़ी।

●

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in